

और सुमरुं खेड़े को भुइयां ऊजड़ खेड़ा दिया बसाई ॥१॥  
रामचन्द्र जी ने ऐसा सुमिरुं लंका करी चढ़ाई ।  
लंकापति रावण ने सुमरुं रामचन्द्र जी सिया हरलाई ॥२॥  
मेघनाथ ने ऐसो सुमरुं शक्ती बान चलाई ।  
बाल जती लछमन ने सुमरुं मार लियो मेघनाथ बलदाई ॥३॥  
पांचों तो पांडवां ने सुमरुं जिन की करी सहाई ।  
हनूमान जोधा ने सुमरुं ठोक पीट वाकी लका जराई ॥४॥  
तुलसी दास भजो भगवाना हरि चरणन चित लाई ।  
विभीषण ने ऐसो सुमरुं लंका को राज दियो रघुराई ॥५॥

१२६

जाहि लगन लागी घनस्याम की ।

घरत कहूं पग पर परत हैं कितहूं, भूल जाय सुधि धाम की ॥  
छवि निहार नहि रहत सार कथुं, घरि पल निसिदिन जामकी  
जित मुंह उठै तित ही धावै, सुरत न छाया घाम की ॥  
अस्तुति निदा करी भल ही, मेड़ तजी कुल गाम की ।  
नारायन वीरी भई डोलै, रही न काहू काम की ॥

१२७

मोहन बसि गयो मेरे मन में ।

लोक लाज कुल कानि छूटि गई, याकी नेह लगन में ॥१॥  
जित देखों तितही वह दीखै, घर बाहर आंगन में ।  
अंग अंग प्रति रोम रोम में, छाइ रह्यो सारे तन में ॥२॥  
कुण्डल भलक कपोलन सोहै, वाजूबन्द भुजन में ॥३॥

कंकन कलित लति  
चपल नैन, भ्रुकुट  
नारायण विन मो

श्या  
ज्यों ज्यों नाम ले  
ना जानी अब सुध  
नारायण नहि छ

वे  
चितवन में, चित  
कव सों परी द्वार  
नारायण महबूब

तुम ही रहत भ  
तुम्हरे बीच गयो  
अब क्यों रोवत  
घरके भेदो वैठि  
नारायण मोहि व

सु